वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल - 2015

* अच्छे जीवन की संरचना
* मनुष्य सब पागल हैं
* परम पूजनीय भगवान ने फरमाया है
* जीवन का उच्च लक्ष्य प्रकट हो गया
* स्मोकिंग से बचे 70 साल में भी धमनियां रहेंगी युवा
* मैं आत्म-हत्या करना चाहता हूं
* जीवन एक कला है करते रहें कुछ नया
* शुभ संग्राम

अच्छे जीवन की संरचना

"मुझ में देव जीवन का विकास" पहले खण्ड में भगवान देवात्मा ने फरमाया है –

"देवत्व के द्वारा विश्व के साथ उच्च एकता स्थापन करने के योग्य बनना ही मनुष्य का परम लक्ष्य है। इस तत्व के प्रकाशित होने पर मुझे विश्व की बहुत बड़ी महिमा दिखाई दी। अब वह मुझे जिस कदर गाढ़ रूप से सत्य और नजर आया, उससे पहले उस कदर कभी नजर नहीं आया था। उसके साथ मुझे अपना जितना घनिंष्ठ सम्न्ध दिखाई दिया उतना पहले कभी दिखाई नहीं दिया था। मैंने उपलब्ध किया कि बनना और बिगड़ना तो नाना सम्बन्धों के साथ भले अथवा बुरे सम्बन्ध सूत्रों की दशा पर ही निर्भर करता है। ईश्वर को मानकर भी उसकी पूजा वा उपासना वा संध्या करके वा नमाज पढ़ने पर भी लोक विश्व के विविध विभागों के साथ नीच सूत्रों से जुड़े रहकर दिनों दिन नीच बनते हैं। पशु और वृक्ष भी जो ईश्वर को नहीं मानते, विश्वगत अनुकूल सम्बन्धियों से जुड़कर बेहतर बनते हैं और प्रतिकूल सम्बन्धियों से जुड़ कर बदतर हो जाते हैं। सम्बन्ध तत्व के इस महा अद्भूत ज्ञान ने विश्व को मुझ पर क्या अपने और क्या और अस्तित्वों के लिए जैसा सच्चा और सार सम्बन्धी प्रकट किया, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता।"

देवात्मा के लिए अच्छे जीवन का मतलब है विभिन्न सम्बन्धों में श्रद्धा, सम्मान, कृतज्ञता, दया, विशुद्ध सेवा और हानि परिशपोध के भावों का स्थापन होना। मनुष्य विविध सामाजिक सम्बन्धों में बन्धा हुआ है। कहीं वह बेटा हैं, कहीं पति, कहीं माता – पिता और कहीं किसी वंश, कुल, बिरादरी, देश, मनुष्यमात्र का सदस्य। उसका सम्बन्ध पशु जगत, उद्भिद् जगत और भौतिक जगत के साथ है। चुंकि मनुष्य विविध सम्बन्धों से घिरा हुआ है, वह इन सम्बन्धों में क्रिया और प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य है। उसके लिए दो विकल्प खुले हैं – प्रवृति या निवृत्ति का मार्ग अर्थात् विविध सम्बन्धों में उदासीनता, तटस्थता, कठोरता और उनका परित्याग निपट अनैतिक है। यह एक सन्यासी का जीवन है। हम जानते हैं कि आदि शंकर, महान वेदान्ती अपनी माता के साथ कितना घनिष्ठ मनोभाव रखते थे। अपनी माता के परलोक गमन पर उन्होंने सन्यास के नियमों को तिलाजंलि देकर अपनी माता का अन्तिम संस्कार किया था। यह कहना कि आदि शंकर ने सन्यास के नियमों को भंग किया – इसका साफ मतलब है कि एक सन्यासी के लिए अपने माता – पिता से पाए उपकारों का स्मरण करना, उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना, उनकी सेवा करना और उनकी मृत्यु पर उनका अन्तिम संस्कार करना पूर्णत: निषिद्ध है। विविध सम्बन्धों में बन्धने का नीति शास्त्र सन्यास की सर्वोच्च अवस्था के विपरीत है। सन्यास की सर्वोच्च अवस्था तो यह है कि आत्मा उस बृह्म में समा जाए या अपने आपको उसमें विलोपन कर दे, जो सब सम्बन्धों को नकारता है। परन्तु यह तथ्य है कि जीवन किसी भी अवस्था में सम्बन्धों के जाल से पूर्णत: मुक्त नहीं हो सकता। प्रत्येक श्वास जो सन्यासी लेता है, उसको याद दिलाता है कि वह अपने आस – पास के वातावरण से अपने आपको पूर्णत: विच्छेद नहीं कर सकता। भोजन का जो भी ग्रास वह लेता है, उसको कायल करता है कि वह उद्भिद् जगत पर आश्रित है। भोजन के तैयार करने में पशु और मनुष्य जगत का हाथ है। विचारों की सोच का वरदान उसको मनुष्य जगत से मिला है। जब सन्यास का जीवन, मनुष्य, पशु, उद्भिद् और भौतिक जगत के अस्तित्वों पर निर्भर है, तो फिर एक सन्यासी यह कैसे कह सकता है कि संसार में प्रवृत्ति और विविध सम्बन्धों में कर्तव्य पालन के

बाकी सफा – 20 पर

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 4

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | अप्रैल – 2015 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

मनुष्य सब पागल हैं

एक मन्द बुद्धि की प्रसिद्ध कहानी बड़ी ही ठोस एक पागल मनुष्य की कहानी है। यह मनुष्य देखने में एक अच्छा भला, साधारण मनुष्य था परन्तु उसकी समझ में दोष था जो एक बड़ी टाहनी पर बैठा था, और वह टाहनी जिस वृक्ष के मोटे तने से जुड़ी हुई थी, उसी को काट रहा था । किसी मुसाफिर ने उसे कहा कि तुम यह क्या कर रहे हो? तुम गिर जाओगे और मर जाओगे । उस ने उत्तर दिया कि मैं केसे गिर सकता हूं, मैने ज़ोर से अपनी टागों से इसे पकड़ा हुआ है। मुसाफिर ने उसकी मूर्खता को देखकर कहा कि तुम तो पागल हो। पागल का शब्द सुनकर वह उल्ट पुल्ट हो गया कहने लगा कि मैं क्यों पागल, तूं पागल, तेरा बाप पागल, तेरा दादा पागल । मुसाफिर अपने रास्ते चल पड़ा, उसने उस मन्द बुद्धि को और समझाने की कोशिश नहीं की । थोड़ी देर में टहनी कट गई और वह भी धड़ाम से नीचे गिर गया ।

यह मन्द बुद्धि जन की उदाहरण सिद्ध करती है, पागल देखने में ठीक, साधारण मनुष्य ही दिखाई देता है, परन्तु उसे अपनी हस्ती के भले बुरे के सम्बन्ध में आवश्यक समझ बूझ नहीं है, वह अन्धेरे में जीता हैं, अन्धेरे के कारण अपनी हानि स्वयं करने के लिए बेबस होता है और किसी के कहने पर भी उसको अपनी हानि और हित समझ नहीं आता । वह अपने आपको ही ठीक जानकर अपनी हानि करता है।

एक 5–7 वर्ष की बच्ची ने अपने घर के भीतर भैंस को खिलाने वाले उबले चने काफी मात्रा में एक बर्तन में पड़े देखे । पहले भी उसकी माता उसे नमक डालकर कुछ प्रतिदिन चने दे देती थी । उस दिन भी उसने मां को पास न देखकर उन चनों की जल्दी जल्दी अपनी जेब वा मुट्ठियों में भर लिया और घर से बाहर दौड़ पड़ी कि मां उससे चने वापिस न ले ले। जब मां ने चनों के बर्तन का ढकण उतरा देखा, वह झट समझ गई कि यह तो मेरी बेटी की करतूत है। वह चने मां ने चूहे मारने वाली दवाई डालकर रखे थे । मां लड़की के पीछे भागी और अवाज़े दी कि लड़की रुक जाए, परन्तु बच्ची और भी तेज दौड़ने लगी कि मां मेरे चने छीनना चाहती है। बहुत मुश्किल से मां ने उसे पकड़ा और उसके हाथों और जेबों से चने निकालकर फैंके। इस भाग दौड़ में बच्ची यही समझती रही कि मां गन्दी है, मेरी दुश्मन है, मुझे स्वादिष्ट चीज खाने नहीं देती। बच्ची के स्वाद की भावना ने उसके भीतर अन्धेरा पैदा कर दिया, उसे पागल और अन्धा बना दिया, जो मां उस पर जान निस्सार करती थी, वह उसे शत्रु के रूप में देखने लगी, अपने आपको सियानी वा चतुर समझती थी। उसी प्रकार सुख स्वादों के इश्क बड़े बड़े बुद्धिमानों, विद्वानों, धनाढ़यों, पद–धारियों को अपने हित और हानि से अन्धा करके पागल बनाए रखते हैं। वह अपनी बर्बादी के राह पर

सरपर दौड़े जाते हैं, जो उनके सुखों की प्राप्ति में विघ्न डालता है, उसे शत्रु समझते हैं और अपने आपको चतुर, चालाक, ठीक और निर्दोष और सुन्दर देखकर खुश होते हैं परन्तु धीरे धीरे दुखों में फंसकर नष्ट हो जाते हैं। सारी मानवता एक विशाल पागल खाना बनी हुई है।

नशों के सुखों द्वारा पैदा हुए अन्धेरे ने बड़े बड़े सिकन्दरों को अपनी सच्ची हानि और हित से अन्धा बनाकर पागल बनाया हुआ है। घरों के घर, मुल्कों के मुल्क, इसकी लत में गोते खा खाकर, घर, परिवार, जागीरें, इज्ज़त, सन्मान, शरीर और रूह का नाश करने पर तुले हुए हैं। ज़हर को, तेज़ाब को, शराब को खुराक खुशीयां देने वाले, नंगे भूखे को शाह बनाने वाला अमृत वा तेहरवां रतन समझ समझकर दुखी और नाश प्राप्त हो रहे हैं। इस आग को घरों में, कल्बों में, होटलों में, बारों में, मौत की नींद सुलाने वाले फनियर नाग को सजाकर रखते हैं और उसे स्टेटस चिन्ह समझते हैं। जो कोई भी जो भी नशा करता है, चाहे वह कोई भी हो, राजा हो, वज़ीर हो, प्रधान हो, वह अपने सच्चे हानि हित से अन्धा और पागल है।

मुझे ज़ुकाम, बुख़ार के समय एक डाक्टर के पास जाना पड़ा, जब मैं अपनी तकलीफ डाक्टर को बता रहा था तो पास बैठे एक मेरे जानकार हकीम ने कहा कि इसका पक्का इलाज़ मैं बता सकता हूं। एक ही खुराक सब ठीक कर देगी। मैं पहले तो चौंका परन्तु मुझे जल्दी ही समझ में आ गया कि यह तो शराब को दवा बताता है, इसलिए मैं चुप हो गया। अगले दिन उसी समय मैं डाक्टर के पास बैठा था तो क्या देखा कि चार आदमी एक रोगी की चारपाई उठाए जा रहे थे। उसकी मौत के पहले की हुंगार की आवाज़ आ रही थी। मेरे पूछने पर कि यह कौन है, उन्होंने हकीम का नाम लेकर बताया कि वह शराब पीकर गिर पड़ा, उसकी गर्दन टूट गई। वह आखिरी सांस ले रहा था। यह जन पागल ही तो था, उसी पागलपन में सारी उमर बिताकर, बर्बाद हो गया। अपनी हानि और हित की कोई सुध नहीं पा सका।

वास्तव में परम पूजनीय भवगान देवात्मा ने जिस प्रकार अपनी लासानी रोशनी में मनुष्य की असल प्रकृति को देखा है। उस अनुसार उन्होंने उसको पागल ही नहीं, अपने सच्चे हानि हित से बेसुध, गाफिल और बहुत कुछ उसी अवस्था में खुश, प्रसन्न और सन्तुष्ट ही देखा है। उन्होंने देखा है कि मनुष्य सुखों का अनुरागी है, ऐसा कोई भी मनुष्य बड़ा, छोटा, आलम, गंवार, अमीर, गरीब, हाकिम, बज़ीर, राजा, गरीब, फक़ीर, नंग, कंगाल नहीं जो एक या दूसरे सुखों का अनुरागी, दास, गुलाम या बन्दी न हो। जो सुखों का अनुरागी है, उसके लिए पाप परायण, झूठ परायण होना भी अवश्यक है। नीच सुखों के अनुराग वा बन्धन ज्यों ज्यों तृप्त होते और बढ़ते रहते हैं, वह कोल़ गैस की तरह अन्धेरा और बेसुधि पैदा करते हैं। उस अन्धेरे में मनुष्य का हिंसक जीवों की तरह हानिकारक होना, अपनी हानि, अपनों और अपने द्वारा दूसरों की हानि करना अवश्यक है। हानि के अपने हृदय पर अन्धकार में हानिकारक रूप से अज्ञात और बेसुध रहना अवश्यक है। यह मनुष्य की अवस्था मनुष्य को पागल बनने और बने रहने के लिए मजबूर रखती है।

एक लहौर होई कोर्ट के जस्टिस को डाक्टरों ने टी.बी. के बिमार घोषित करके ज़ोरदार वारनिंग दी कि वह जल्दी से जल्दी पहाड़ पर जाने पर अपना ईलाज फिकर के साथ कराएं। उन्होंने परवाह नहीं की और जून के महीने तक इन्तज़ार करते रहे। तब तक वह बिमारी बेईलाज हो गई और फिर वह पहाड़ पर जाकर बच न सके।

फाज़िलका के एक कालजिएट ने अपने

S.D.M. साहिब पिता की, उनकी ही बन्दूक के साथ गोली मारकर सोए हुओं की हत्या कर दी थी, पिता ने पढ़ाई के लिए लापरवाह होने पर सख़्त सुस्त कहा था।

एक मां ने अपने इकलौते बेटे को फेक्टरी का बिल भरने के लिए मांगने पर पैसे न दिए, उसने पंखे से लटक कर आत्म हत्या कर ली।

काम वासना के सुख की गुलामी से हानियों, बर्बादियों और मौतों का भारत के भीतर विशेष रूप से सैलाब आया हुआ है। अनभोल बच्चियों को, जो कुछ महीनों, चन्द सालों की उमर की होती हैं, उनको बर्बाद किया जाता है।

एक लेडी डाक्टर सुन्दरी ने, अपने प्रशंसक जज साहिब को एक ग्रन्थी को 5 लाख रूपये देकर इसलिए मरवा दिया कि उसने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर उसके साथ शादी करने से इन्कार कर दिया था।

विज्ञान के पितामह, इंगलैंड के खजाना मन्त्री, महान दार्शनिक सर फ्रासिस बेकन साहिब को रिश्वत के जुरम में जेल जाना पड़ा और बहुत अपमान जनक मौत प्राप्त हुई।

अपने सुखों के आर्कषणों के अन्धकार में उक्त व्यक्तियों की तरह ही संसार का बच्चा बच्चा अन्धेरे में रहने के लिए और अपनी सच्ची हानि हित से बेख़बर रहने के लिए इस पागलपन में अपनी और दूसरों की हानि करने के लिए बेबस हैं।

सारी मानवता को उक्त आत्म अन्धकार से मुक्त होने के लिए और अपनी योग्यता के अनुसार अपनी सच्ची हानि और हित का बोध पाने के लिए और आत्म निरीक्षण करने के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा की रोशनी की अतिशय आवश्यकता है।

मनुष्य अपने शरीर की या धन की या इज्ज़त की हानि को तो किसी अंश अपनी अक्ल की रोशनी में देख सकता है, परन्तु वह अपने असल अस्तित्व, मुख्य और सार वजूद, अपने परिचालक अपने आत्मा को, उसके पतन और हानि को तो अपनी लाख चतुराई से भी नहीं देख सकते। उच्च भावों की हानि और उसके द्वारा जीवन की या आत्मा की मौत की हानि का दृश्य उसकी सोच, समझ से बेहद परे की चीज़ है। उक्त आत्म अन्धकार का शिकार होकर प्रत्येक मनुष्य अपनी आत्मा की हानि करने के लिए रत रहने के लिए बेबस और लाचार है।

इस गहरे आत्मिक अन्धकार के कारण यह सारी मानवता को पापों और झूठ की आग लगी हुई है। आज-कल विश्व में झूठ और मिथ्या और बुराईयों का बाज़ार गर्म है।

संसार के धर्म लाख पूजा-पाठ करके वा करवाके, स्नान करके, हवन करवाकर, जाप करके, रोज़े नमाज़ और हज्ज करके और अनेक धर्म के साधन करके भी मनुष्य झूठ और बुराई की आग बुझाने में असमर्थ्य हैं।

मानवता की इस कृपा-पात्र अवस्था को देखकर ही परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है:- ''मनुष्य सब पागल हैं।'' जो पागल खानें में बन्द है, वह कुछ अधिक पागल हैं, जो बाहर हैं, वह कुछ कम पागल है।''

पूर्ण सत्य और हित अनुरागी ने उक्त शब्द कि ''मनुष्य सब पागल है'' आदि फरमाए हैं। जो आज तक किसी भी धर्म अस्थापक, दार्शनिक, चिन्तक, वैज्ञानिक ने नहीं कहे । हां, यह बड़ी ही ठोस और गहरी सच्चाई है वही शरोमणी हस्ती कह सकते थे, क्योंकि अपनी अद्भुत रुहानी रोशनी में यह सच्चाई, केवल उन्हें ही दिखाई दी और दे सकती थी, और किसी पक्ष में बड़े से

बड़े मनुष्य को मानव इतिहास में यह सच्चाई आजतक प्रकृत रूप में दिखाई ही नहीं दे सकती थी और इसीलिए नहीं दी ।

उक्त बड़े ही ज़ोरदार और कठोर दिखने वाले शब्द और बड़े Commanding और सारी मानवता को चैलंज करने वाले, बड़े तीखे, कड़वे शब्द हैं, परन्तु हैं पूर्णत: सत्य, नहीं तो पूर्ण सत्य अनुरागी यह शब्द कैसे कह सकते थे, मनुष्य को तो यह अतिश्योक्ति लग सकते हैं, यह स्वभाविक है, परन्तु जब कोई साधक, उनकी ही अद्भुत रोशनी में इस सच्चाई पर चिन्तन करता है, तो वह इस सच्चाई के दर्शाता परम पूजनीय भगवान देवात्मा के चरणों की धूल पर साष्टांग सजदा करने के लिए बेबस हो जाता है और अनुभव करता है कि इस सचाई के चिन्तन करने में भगवान की रोशनी में गहरी रोशनी है और इस मनन करने में ही समस्त मानवता के प्रत्येक मनुष्य का हित वा परम हित छुपा हुआ है। धन्य हैं वह रुहानी दुनियां के यक्ता सूरज, लाख लाख बार धन्य हैं वह सच्चे हित विधाता, जिन्होंने हमारे हित के लिए, इतनी ठोस सच्चाई का प्रकाश किया है । जो शत: प्रतिशत सत्य है और हित और परम हित करने वाली है।

उक्त सितारों की तरह शब्दों पर चिन्तन करने की आवश्यकता है, जो मनुष्य की असल हालत को दर्शाते है।

बलदेव सिंह

मैंने हर रोज़ जमानें को रंग बदलते देखा है, उम्र के साथ ज़िन्दगी को ढंग बदलते देखा है।
वह जो चलते थे, तो शेर के चलने का होता था गुमान, उनको भी पांव उठाने के लिए,
सहारे को तरसते देखा है।
जिनकी नज़रों की चमक देख सहम जाते थे लोग, उन्हीं नज़रों को बरसात की तरह रोते देखा है।
जिनके हाथों के ज़रा से इशारे से टूट जाते थे पत्थर, उन्हीं हाथों को पत्ते की तरह थर थर कांपते देखा है।
जिनकी आवाज़ से कभी, बिजली के कड़कने का होता था भ्रम,
उनके होठों पर भी ज़बरन चुप्पी का ताला लगा देखा है।
यह जवानी, यह ताकत, यह दौलत इनके रहते हुए भी इन्सान को बेजान होते देखा है।
अपने आज पर इतना न इतराना मेरे यार, वक्त की धारा में अच्छे अच्छे को मजबूर होते देखा है।
कर सको तो किसी को खुश करो, दुख देते तो हज़ारों को देखा है।

विशेष सत्संग

जैसे पहले सुचित किया जा चुका है कि विशेष सत्संग देव आश्रम, डेरा बस्सी निकट चण्डीगढ़ में 10 अप्रैल 2015, शुक्रवार से आरम्भ होकर 17 अप्रैल 2015 शुक्रवार सुबह तक चलेगा ।

फिर 17 अप्रैल 2015 शाम से संगरूर मन्दिर निकट सरकारी रैस्ट हाऊस, डी.सी, रैजीडैंस रोड, में आरंम्भ होकर सुबह तक अर्थात 20 अप्रैल सुबह तक चलेगा। आने वाले साथी नोट फरमाएं

निवेदक : बलदेव सिंह

परम पूजनीय भगवान ने फरमाया है:

(पूजनीय देवशास्त्र खण्ड 3)

"अपनी ही किसी सुखदायक वासना व कामना की तृप्ति चाहना, और अपने संबन्ध में किसी और की किसी उचित और शुभ इच्छा को भी अपने किसी सुख के विरूद्ध पाकर उसे पूरा करना न चाहना और उससे पीछा छुड़ाने का यत्न करना स्वेच्छाचारिता कहलाती है।

स्वेच्छाचारी मनुष्य एक ऐसे घोड़े की न्यांई होता है, कि जो अपने सेवाकारी मालिक को भी अपनी पीठ पर चढ़ाना या उसके लिए किसी गाड़ी में जुतना न चाहता हो, और यदि वह उसकी पीठ पर चढ़ने व उसे किसी गाड़ी में जोतने की कोशिश करे, तो वह इससे कुपित होकर उसे अपने मुंह से काटने वा लात मारने वा किसी और विधि से हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाता हो।

"यह महा नीच अनुराग लाखों मनुष्यों में पाया जाता है। इस भाव से परिर्पूण मनुष्य का एक एक छोटा बच्चा तक उसके लक्षण प्रकाश करता है। वह अपनी माता वा अपने पिता की किसी उचित और ऐसी भली बात मानने या उसके अनुसार चलने से भी घ़बराता और कष्ट मालूम करता है, कि जो उसके अपने किसी सुख अनुराग के विरूद्ध हो और उनमें से किसी के लिए उसके भीतर इतना अधिक भय न हो, कि जिससे उसे अपनी इच्छा के अनुसार चलने में जो सुख मिलता है, उस सुख की तुलना में उनसे किसी बड़े कष्ट पाने की संभावना दिखाई देती हो और जिसके ग्रहण करने के लिए उसका दिल तैयार न हो, तो वह उनके किसी ऐसे आदेश को नहीं मानता। और यदि उसकी इस गति में उसके माता पिता कोई रोक उत्पन्न करने के लिए अपने भीतर कोई बल वा साहस न रखते हों, तो वह अपनी ऐसी गति के द्वारा दिनों दिन स्वेच्छाचारी बनता चला जाता है। और फिर वह अपने परिवार वा अपनी सोसायटी के किसी ऐसे आवश्यक और हितकर नियम वा अपने किसी विहित शासनकर्ता की किसी ऐसी उचित आज्ञा के पालन करने के योग्य नहीं रहता, कि जो उसके किसी सुख दायक भाव के विरूद्ध हो।"

स्वेच्छाचारिता और सच्ची स्वाधीनता – में अन्तर

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने उपरोक्त विषय पर देववाणी में इस प्रकार फरमाया है (देववाणी के नोट) "मेरे परिवार या समाज का अंग होकर उनके शासनकर्ताओं की शुभ आज्ञाओं को न मानना स्वेच्छाचारिता कहलाती है"।

अक्सर हम अपने जीवनों में क्या देखते हैं। यदि हमारा कोई बड़ा हमारी भलाई के लिए कोई रोक टोक करे या कोई ऐसी आज्ञा दे जो हमारे शुभ की होने के बावजूद हमारी इच्छा के विरूद्ध हो तो हमारी क्या प्रतिक्रिया होती है? हम अपने हितकर्ता से फट जाते हैं, मुंह बना लेते हैं और अनेक बार बुरा भला भी बोल जाते हैं वा कुढ़ना आरंभ कर देते हैं। हमारा बढ़ा हुआ अंह अनुराग हमसे और करा भी क्या सकता है इतना सब करके हम अपने आप को ठीक और अपने हितकारी को गल्त मानकर उनसे फट जाते हैं और नीच घृणा का शिकार हो जाते हैं।

भगवान फरमाते हैं, "किसी जन में अंह अनुराग जितना बढ़ा हुआ होता है, उतना ही वह अपनी मर्ज़ी पूरी करना चाहता है। ऐसा जन अपनी किसी नीच

रुचि पर चोट लगने से झुंझला उठता है और अपने हितकर्ताओं से फट जाता है। जिस प्रकार एक-एक बच्चा दिन रात अपनी माता से सेवा पाकर तत्काल उससे फट जाता है। जब ही वह कोई काम बच्चे की मर्ज़ी के खिलाफ करना चाहती है, यथा बच्चा अपना मुंह धुलाना नहीं चाहता और माता मुंह धोना चाहती है, तब माता की इस भली कोशिश से भी बच्चा नाराज़ हो जाता है।"

भगवान फरमाते है, "स्वेच्छाचारिता और स्वाधीनता दोनों एक नहीं हैं। अपने और औरों के भले के लिए यदि किसी जन में आकांक्षा वर्तमान हो और वह उसमें किसी की ओर से कोई रोक पसंद न करता हो, तो यह उसकी उचित आज़ादी वा स्वाधीनता कहलाती है।"

आगे चलकर उदाहरण देते हुए भगवान ने फरमाया, "यथा यदि मैं उचित हमदर्दी के भाव से किसी दुखिया का दुख दूर करना चाहता हूं या अपने ही भले के लिए कोई धर्म साधन करना चाहता हूं, तो इसमें किसी को रोक-टोक करने का कोई अख़्तियार नहीं है। इसी प्रकार यदि कोई अनपढ़ स्त्री पढ़ना चाहती है तो उसे पढ़ाई से बंद करने का किसी जन की कोई अधिकार प्राप्त नहीं है।"

"अब जहां एक ओर मनुष्य की सच्ची स्वाधीनता उसके लिए और औरों के लिए मुबारिक वस्तु है, वहां स्वेच्छाचारिता क्या उसके लिए क्या दूसरों के लिए बहुत अनुचित और हानिकारक वस्तु है। इसलिए स्वेच्छाचारिता से बचने की प्रत्येक जन के लिए नितांत आवश्यकता है।"

"तुम्हें स्वेच्छाचारिता और स्वाधीनता में अंतर को भली भांति जानना चाहिए। स्वेच्छाचारी मनुष्य मनमुख होता है। वह गुरूमुख नहीं होता और न ही वह गुरूमुख बनना चाहता है।"

भगवान देवात्मा को हमारे जैसे स्वेच्छाचारी, मनमुख शिष्य ही मिले इसलिए हमारे लिए यह सम्भव ही नहीं कि उनके कष्टों, यातनाओं और घोर से घोर दुखों का अंश भर भी अनुमान लगा सकें जो उन्हें हम मनुष्यात्माओं से सहने पड़े। काश! कि हम अपनी स्वेच्छाचारी, मनमुख चाल छोड़कर गुरूमुख बनकर अपने निराले सत्गुरू की इच्छाओं और आज्ञाओं का पालन कर सकें। ऐसा करने से हमारे जीवन किस प्रकार उच्च खुशियों से लहलहा उठेंगे उसका पूर्व अनुमान भी असम्भव ही है।

सफा 16 का बाकी

स्मृतियों में हैं, निराशा में हैं, वह भूत ही तो हैं।

उन से बचें, वे सारी मानसिक ऊर्जा को सोख लेते हैं। मन का और पानी का स्वभाव एक जैसा होता है। दोनों नीचे की ओर बहते हैं। ऊपर उठाने के लिए जोर लगाना पड़ता है। बल लगता है। इसलिए हर प्रयास के लिए प्रयास करने से पहले, जो नैगेटिव होता है, जो नैगेटिव ऊर्जा है, उस से दूर रहा जाए। समाचारपत्रों को, टीवी न्यूज को, जहां नकारात्मकता का भंडार जमा है, उन से सुबह और रात को दूर रहा जाए। 'हौरर शो', ब्रेकिंग न्यूज आदि सब नकारात्मक सोच के भंडार हैं, इन से बचें।

ज्योतिषियों से बचें, सुबहसुबह पंचांग देखना बंद करें। जो भविष्य वक्ता हैं, वे नकारात्मकता के व्यवसायी हैं, वे सकारात्मक खुद के लिए होते हैं, आप को अंधेरे में धकेल कर खुद उजाले में दौलत और शोहरत बटोरते हैं। दुनिया का कोई ज्योतिषी न तो अपनी न किसी अन्य की आयु का एक भी पल बढ़ा सकता है। हां, चिकित्सक अवश्य प्रयास करता है।

ये सब नकारात्मक लहरें हैं जो आप को एक कदम चलने से रोक देती हैं। प्रयत्न विमुख कर देती हैं। इन से बचाव मात्र वर्तमान में निरंतर करना है।

(सरिता से साभार)

जीवन का उच्च लक्ष्य प्रकट हो गया

जैसे सूर्य की धूप में प्रवेश करते ही जाड़ा भाग जाता है और शरीर में गर्मी और प्राण संचार हो जाता है, उसी प्रकार मैंने आपकी सक्खर (अब पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त में) में वर्तमानता को अपने लिए अनुभव किया है। मेरा आध्यात्मिक ठण्डापन दूर होता जा रहा है। और मैं चाहूं या न चाहूं, मेरे भीतर गर्मी और ताकत आ रही है। आपने हमें बारम्बार अदभुत मानसिक और आध्यात्मिक ज्योति प्रदान करने की भी करुणा की है। भगवान् मुझे याद है कि किस प्रकार आपने 15 नवम्बर को हमारी दृष्टि को जीवन के उस नीच लक्ष्य और पाश्विक स्तर से ऊंचा उठाने की कृपा की है कि जिसमें साधारणत: हमारा जीवन व्यतीत होता है। आपने दृष्टान्त देकर जो रोशनी प्रदान की, उस रौशनी में अब मैं देख रहा हूं कि यदि कोई मनुष्य पाप न करे, परन्तु उसका कोई उच्च लक्ष्य भी न हो तो उसकी अवस्था एक कव्वे से बेहतर नहीं है। क्योंकि जैसे भूख कव्वे को घोंसला छोड़ने और खुराक की खोज में निकलने के लिए परिचालित करती है, और अपनी भूख को निवारण कर चुकने पर जैसे वह फिर घोंसले में आकर सो जाता है, उसी प्रकार शारीरिक आवश्यकताएं मनुष्य को अपने घर से निकाल कर किसी काम पर जाने और सारे दिन के परिश्रम के बाद, और अनेक बार नीच कर्म करने के बाद, अपने घर वापिस आकर आराम करने और सो जाने के लिए परिचालित करती हैं। कव्वा और मनुष्य दोनों ही अपने शारीरिक जीवन के लिए भागे फिरते हैं। दोनों में अन्तर यह है कि जब दोनों मरेंगे तो कव्वा मनुष्य से यह कह सकेगा कि तुमने धन कमाने और जोड़ने में जो अनेक बुरे कर्म किए हैं, वह मैंने नहीं किए। आह! वह मनुष्य जो अपने लक्ष्य में कव्वे से ऊंचा नहीं उठता, अत्यन्त कृपापात्र है। मेरे भगवन! मैंने उस समय अपने आप को इतना नीचा और क्षुद्र अनुभव किया कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। उससे अगले दिनों में आपके उपदेशों ने मुझे जो कुछ अनुभव कराया है, वह यह है: –

(1) मैंने अनुभव किया है कि आपके भीतर मिथ्या धर्म मतों की मिथ्या शिक्षा और झूठे विश्वासों के लिए अत्यन्त गहरी घृणा वर्तमान है। आपके शक्तिशाली, जीवन और गहरे उपदेश अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं और मुझे ज्योति और बल से भर रहे हैं। मैं उस भव्य सच्चाई को – जो मुझ पर और अन्य जनों पर बड़े प्रकाशमान ढंग से अंकित की गई, भूल नहीं सकता, कि नेचर सत्य है, वह ख़याली चीज नहीं है और नेचर मिथ्या को घृणा करती है। यदि मनुष्य अपनी मूर्खता में पत्थर को गेहूं समझकर खा जाएगा तो वह पत्थर का ही फल प्राप्त करेगा, न कि गेंहू का। कितना सच्चा और अकाट्स सत्य!

(2) मैंने यह देखा कि आप सचमुच उच्च जीवन को धन और मानसिक योग्यताओं की अपेक्षा बहुत ऊंचा स्थान देते हैं। देव समाज की गठन में भी हम यही कुछ देखते हैं। आपके दैनिक जीवन में भी आपके इसी रूप के दर्शन होते हैं। भगवान! जब आपने अपने मुखारबिन्द से फ़रमाया कि 16 वर्ष की आयु से ही आपका अधिक सम्बन्ध उन्हीं जनों से था जो जीवन के विचार से अपेक्षाकृत उच्च श्रेणी के थे, और आप धनवानों और केवल विद्या, बुद्धि, ताकत और पद रखने वालों के पीछे और उनके द्वारा अपनी स्तुति और सहायता चाहने के

पीछे कभी नहीं गए, तो आपकी इस वाणी ने मुझे बहुत उभारने का काम किया। मैं स्पष्ट रूप से देख सकता था कि आप अपने देवत्व के जीवन के लिए पूर्ण रूप से सच्चे हैं। घोर दुख सहते हुए और चारों ओर से सताए जाकर भी आपकी अपने देव जीवन के लिए ऐसी अलौकिक वफादारी समय के साथ अधिकारी आत्माओं में आपके प्रति गहरी से गहरी कृतज्ञता पैदा करेगी।

(3) मैंने यह भी देखा है कि अपनी ज्योति शक्ति मानवता को प्रदान करने के संग्राम में आपने कभी शारीरिक कष्टों और थकान की परवाह नहीं की। आपके इस दृष्टान्त ने, कि आप अपने प्रचार के आरम्भ काल में अकेले ही स्थान स्थान में घूमे हैं, चाहे आपकी किसी ने कदर की या न की, आपकी आवश्यकताएं समय पर पूरी हुई या न हुई, पूरी नींद मिली या न मिली, और सफर से अन्य कष्ट मिले, परन्तु आप शिकायत का एक शब्द भी कहे बिना अपनी उच्चतम सेवा में लगे रहे, मुझे बहुत उत्साहित किया है। फिर जब मैं देखता हूं कि आप गले की सख्त तकलीफ और शारीरिक कष्टों के होते हुए भी हमें अपने चरणों में बुला कर शक्तिशाली उपदेश देते रहे हैं तो मैं चकित हो जाता हूं, कि हे भगवन! आपका सत्य और शुभ का प्रेम निसन्देह मनुष्य जगत से ऊपर की वस्तु है।

(4) भगवन! आपके यहां (सक्खर में) निवास के दिनों में मुझे आभास हुआ है कि जीवन कोई फर्जी चीज़ नहीं है, वह एक ठोस सच्चाई है। किसी ऐसे भारतवासी के लिए यह अनुभूति निसन्देह कितनी कठिन है, जिसे वेदान्त ने प्रत्येक वस्तु के मिथ्या और फर्जी होने का पाठ पढ़ाया हो। मैंने अनुभव किया है कि आत्मा की उच्च शक्तियां केवल ख़याल कर लेने की चीज़ नहीं किन्तु विकसित करने की वस्तु हैं। इस सच्चाई ने मुझ पर अपनी असल कीमत प्रकट कर दी है। मैं अपने आपको जैसा समझ बैठा हूं, वैसा मैं नहीं हूं। मैंने अनुभव किया कि मुझे अपनी नीच प्रकृति से लड़ने की आवश्यकता है और आपकी ज्योति और शक्ति पाकर हानिकारक गतियों से उद्धार पाने की आवश्यकता है, अन्यथा मेरा नाश अनिवार्य है।

(5) भगवन्! आपने मेरा वृथा भय दूर कर दिया है। आपकी इस वाणी ने, कि शरीर की मृत्यु से मनुष्य केवल शरीर ही खोता है। यद्यपि उसकी रक्षा का भी भरसक प्रयत्न करना चाहिए, परन्तु शारीरिक मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। हां अपने आत्मा के जीवन को यदि नष्ट कर लिया है (दूसरों के अधिकारों का अपहरण करके और विविध सम्बन्धों में नीच गतियां करके) तो अवश्य बहुत डरने की आवश्यकता है। आपके इन शब्दों ने मुझे नैतिक बल और साहस से भर दिया है।

(6) आपने मुझे यह ज्योति प्रदान की है कि कोई भी जन जो उच्च जीवन के लिए सच्चा रहता है, अन्त में कभी नुकसान नहीं उठाएगा। नेचर का अपना विकास क्रम ऐसे जनों की रक्षा करता और उन्हें जय देता है, जो विकास क्रम के साथी और सहायक बनते हैं। इस सत्य की ज्यों ज्यों उपलब्धि होगी, दुर्बल आत्मा भी मानवता को उच्च बनाने के काम में साहस और उत्साह प्राप्त करेंगे।

(7) भगवन्! 'पूजा' के विषय में आपके उपदेश ने मुझे एक सर्वथा निराली रौशनी से भर दिया। जैसे आपका जीवन अद्वितीय है, वैसे ही आपकी फिलासफी भी अद्वितीय है। मोक्ष के बारे में आपकी यह शिक्षा कि नीच जीवन या नीच गतियों से उद्धार लाभ करना ही सच्ची मोक्ष है, सर्वथा नई है। पूजा का दूसरा मार्ग अर्थात उच्च शक्तियों को विकसित करना भी धर्म जगत में पूर्णत:

नई सच्चाई है। जो पूजा यह फल पैदा नहीं करती, वह बिल्कुल व्यर्थ है। फिर आपकी यह अनुपम वाणी, कि जहां पुजारी के भीतर मोक्ष पाने की योग्यता होनी चाहिए और पूज्य के भीतर ऐसी शक्तियां होनी चाहिएं जिनके द्वारा वह पुजारी को नीच जीवन से मुक्त कर सके, और उसमें उच्च भाव जागृत कर सके, मेरे सन्मुख एक नई दुनियां खोल देती है।

(8) भगवान! मैंने यह भी ज्योति प्राप्त की कि शुभ और सुख दो भिन्न भिन्न वस्तुएं हैं। मैं अब देख सकता हूं कि कितना आकाश पाताल का अन्तर है। वह एक दूसरे के बिल्कुल विरुद्ध हैं। मैं यह ज्ञान प्राप्त कर पाया हूं कि सुख को लक्ष्य बना कर पतन को प्राप्त होना अनिवार्य है। मिथ्या मूलक धर्म मत जैसे आत्मा के रूप और गठन को नहीं जान सके, वैसे ही उन नियमों को भी न जान सके। मेरे भगवन्! इस महान समस्या के समाधान का अनुपम श्रेय आपको और केवल आपको प्राप्त हुआ है।

इस सब महा दान के लिए मैं आपको गहरे भावों से धन्यवाद देता हूं।

प.व.क.

स्मोकिंग से बचे 70 साल में भी धमनियां रहेंगी युवा

आपका जीवनकाल कितना होगा, यह आपकी धमनियों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। धमनियां जितनी स्वस्थ होंगी, दिल भी उतना बेहतर तरीके से काम करता रहेगा। डॉक्टरों के मुताबिक, 25 साल के स्मोकर की धमनियों की उम्र 70 साल के वृद्ध के बराबर होती है। जबकि स्मोकिंग न करने वाले और स्वस्थ जीवन जीने वाले 70 साल के वृद्ध की धमनियों की उम्र 40 साल के युवा जैसी होती है।

महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में दिल की बीमारियों के लक्षण पहले सामने आ जाते हैं। युवा अवस्था में ओसट्रोजन हॉरमोन महिलाओं को दिल की बीमारियों से बचाते हैं। मेनोपॉज से पहले महिलाओं में एचडीएल का स्तर पुरुषों की अपेक्षा बेहतर होने के कारण भी ये खतरे कम हो जाते हैं। लेकिन, मेनापॉज के बाद स्थितियां बिल्कुल बदल जाती हैं। इस अवस्था में अपनी उम्र के पुरुषों के मुकाबले महिलाओं में कार्डियोवेस्कुलर बीमारियों के खतरे बढ़ जाते हैं। विशेषकर 65 की उम्र के बाद। इस दौरान उन्हें हार्टअटैक के बजाए एंजाइना का खतरा ज्यादा होता है। जबकि 75 से ज्यादा की उम्र वाली महिलाओं में हार्ट फेल का रिस्क ज्यादा होता है।

हाईपरटेंशन, डायबिटीज, हाई कॉलेस्ट्रॉल और स्मोकिंग से दिल के मसल्ज़ और धमनियां अकड़ जाती है। जिससे दिल की बीमारियों की आशंका बढ़ जाती है। भारत में 25 से ज्यादा उम्र के लोगों में 25 प्रतिशत 60 से 65 उम्र के लोगों में 50 फीसदी और 75 की उम्र के 80 फीसदी लोगों में हाइपरटेंशन और डायबिटीज पाई जाती है। शुरूआत में ही इलाज और बेहतर जीवन प्रबंधन से इन गंभीर बीमारियों के घातक परिणामों से बचाया जा सकता है।

दिल को स्वस्थ रखने के उपाय :- 25 साल की उम्र से ही समय - समय पर ब्लड प्रैशर, बल्ड ग्लूकोज और लिपिड के स्तर की जांच करना शुरू कर देना चाहिए। नियमित रूप से एक्सरसाइज करें। साथ ही 40 मिनट की वॉकिंग भी फायदेंमद होगी। संतुलित लो फैट डाइट लें। हाई फाइबर डाइट ज्यादा लेने की कोशिश करें।

मैं आत्म–हत्या करना चाहता हूँ।

प्यारे साथियो! आप उपरोक्त शीर्षक पढ़ कर आश्चर्यचकित हो गए होंगे, कि ये मैं क्या और क्यों चाहता हूँ? ऐसा नहीं है कि मैं आत्म–हत्या करना चाहता हूँ, मैं बहुत प्रसन्न हूँ क्योंकि मुझे मनुष्य–जीवन के साथ साथ और बहुत सारे अमूल्य उपहार मिले हुए हैं। मेरे श्रद्धेय पिता जी एक 'शेयर' अक्सर सुनाया करते थे: –

"जिन्दगी के चमन से छांटे हैं–चाहिए तो पेश करूँ,
मेरे दामन में चंद कांटे हैं।"

मेरे जीवन में ऐसा कोई नहीं, कि जो मुझे जीवन हि भुला दे। यदि आप मुझसे जानना चाहें कि मेरे जीवन में सबसे बढ़कर अमूल्य उपहार क्या है– तो मैं निस्संदेह कह सकता हूँ, कि "मनुष्य सृष्टि के सरताज, विज्ञान–मूलक धर्म के संस्थापक, अद्वितीय देव–जीवन धारी परम पूजनीय भगवान् देवात्मा मुझे गुरू रूप में प्राप्त हुए हैं, मेरे जीवन का यह सबसे बड़ा उपहार है जो प्रकृति–माता की ओर से मुझे वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। मेरा जीवन काँटों से नहीं अपितु फूलों से भरा पड़ा है।

आपकी सोच को उद्वेलित करने के लिए आपकी सेवा में उपरोक्त प्रश्न खड़ा करना चाहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति जो शारीरिक बिमारी, गरीबी, सम्बन्धियों से अनमेल या किसी और कारण से आत्म–हत्या करना चाहता हो, और अचानक वह आपको मिल जाए और आपसे सलाह मांगे कि मैं आत्म–हत्या कर लूं या न करूँ, तो आप उसे क्या सलाह देंगे? हमें यह ध्यान रखने की बहुत बड़ी आवश्यकता है कि हम जो भी सलाह दें, वह बुद्धिमता–पूर्ण तथा सत्य और शुभ के नियमों पर आधारित होनी चाहिए।

ऐसी हि सलाह एक बार परम पूजनीय भगवान् देवात्मा से उनके एक अनन्य शिष्य (जो उनके देव रूप के अनुरागी थे) श्रीमान पण्डित परमेश्वर दत्त जी 'विशारद' ने माँगी थी। आप एक जानलेवा बीमारी से बुरी तरह ग्रस्त तथा परेशान थे, डाक्टरों ने पूरी तरह सब प्रकार के संभव इलाज करने के पश्चात बता दिया था कि अब पण्डित जी इस बीमारी से कभी ठीक नहीं हो सकेंगे, और धीरे धीरे क्षय होते होते मृत्यु के मुंह में चले जाएंगे। पण्डित जी का शरीर दिन प्रति दिन दुर्बल और कमज़ोर होता जा रहा था, वह न ढंग से बैठ सकते थे, न कुछ खा पी सकते थे और न हि कुछ काम कर सकते थे। अपनी बीमारी से तंग आकर एक दिन उन्होंने निर्णय लिया कि मुझे आत्म–हत्या कर लेनी चाहिए, ताकि इस रोगी और बीमार शरीर से मेरा छुटकारा हो और परलोक में जाकर मैं कुछ हितकर कार्य करने का अवसर पा सकूं।

आत्म–हत्या करने वाला व्यक्ति किसी से पूछा नहीं करता, अपितु वह तो यह सब कर गुज़रता है। लेकिन श्री पण्डित जी भगवान् देवात्मा के अनन्य भक्त थे, और उनकी प्रत्येक आज्ञा पालन करना अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मानते थे। इसलिए उन्होंने भगवान् की सेवा में एक पत्र लिख कर सलाह तथा आज्ञा माँगी।

"परम पूजनीय भगवान् देवात्मा" जो सत्य और शुभ के पूर्णांग अनुरागी हैं, तथा मिथ्या और अशुभ के पूर्णांग शत्रु हैं, वह कैसी सलाह देंगे, इस पर हम सबको बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। पण्डित जी के पत्र के उत्तर में भगवान् ने फरमाया, परमेश्वर दत्त जी, हम मानते हैं कि आपको जान लेवा बीमारी ने घेर

रखा है, आपका जो उचित इलाज संभव था वह सब करवाया गया, तथा अब भी जो कुछ संभव है, आपके लिए किया जा रहा है, हम यह भी मानते हैं कि समय के साथ साथ आपका शरीर दिन प्रतिदिन दुर्बल और कमज़ोर होता जा रहा है, और फिलहाल इस बीमारी का कोई पक्का – ईलाज मानवता के पास फिलहाल नहीं है। लेकिन फिर भी हम आपको आत्म – हत्या कर लेने की सलाह नहीं दे सकते। कारण यह कि आपका सम्पूर्ण अस्तित्व (शरीर तथा आत्मा) आपका अपना नहीं है। आपके इस अस्तित्व को जन्म देने, इसकी रक्षा करने, इसका पालन पोषण करने तथा आपका समुचित विकास करने के लिए चारों जगतों (यथा भौतिक – जगत, वनस्पति – जगत, पशु – जगत तथा मनुष्य – जगत) के अनगिणत अस्तित्वों ने वर्षों बहुत संग्राम किया है। आपने सांस के द्वारा कितनी वायु, पीने के द्वारा कितना पानी, भोजन तथा अन्य लाभ इस संसार से प्राप्त किये हैं। चारों जगतों की अथाह सेवाओं का आपके ऊपर बहुत ऋण चढ़ा हुआ है। मनुष्य – जगत के द्वारा आपको सुसभ्य बनने का तथा मनुष्य होने के नाते उन सब लाभों को पाने का अधिकार प्राप्त है, जो नीचे के तीनों जगतों यथा: भौतिक – जगत, वनस्पति – जगत तथा पशु – जगत को प्राप्त नहीं है। आप चारों जगतों से पाए हुए अमूल्य तथा अनगिणत उपकारों को सन्मुख ला सकें तो आपको साफ पता चलेगा, कि ये मनुष्य – जीवन जो आपको मिला हुआ है, यह आपका अपना नहीं है, बल्कि किसी और की अमानत है। इसलिए आपको किसी और के जीवन को समाप्त करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि कोई जन आत्म – हत्या करता है, तो वह अपनी कायरता का प्रमाण तो देता हि है, इसके साथ साथ वह दूसरों की अमानत को दबा लेने का महा – पाप भी करता है, तथा औरों को आत्म – हत्या कर लेने के लिए प्रेरणा का हेतु भी बनता है। ऐसा जन इस लोक के साथ साथ परलोक में भी दारूण दुखों और कष्टों का भागी बनता है तथा एक न एक दिन परलोक में भी आत्मिक – मृत्यु को प्राप्त होता है। आत्म – हत्या करने का कितना भयानक दण्ड!!!

इसलिए आप आत्म – हत्या का विचार बिल्कुल त्याग दें। आपका केवल एक हि कर्तव्य है कि आप अपनी इस जानलेवा बीमारी के साथ बहादुरी से तब तक जंग करते रहें, जब तक कि आप में प्राण है। ऐसा करने से बेशक आपकी बीमारी तो ठीक नहीं होगी, और आपका कष्ट दिन प्रति दिन बढ़ता हि जाएगा और एक दिन आपके स्थूल शरीर की मृत्यु भी हो जाएगी। लेकिन ऐसा साधन करने से आपका आत्म – बल बहुत बढ़ जाएगा, आपमें धर्म – शक्ति बहुत बढ़ जाएगी तथा आपको उच्च – जीवन प्राप्त होगा। परलोक में जो सूक्ष्म – शरीर आपको प्राप्त होगा, वह बहुत स्वस्थ तथा निरोग होगा, और आप वहां पर बहुत अच्छे तथा उत्तम कार्य करने की योग्यता लाभ कर सकेंगे और आप आने वाली नस्लों के लिए एक प्रेरणा – स्त्रोत बन कर उभरेंगे, तथा मनुष्य – इतिहास में आपका एक विशेष स्थान होगा।''

प्रिय मित्रो! आप सहज अनुमान लगा कर देखें कि श्री पण्डित जी (जिनकी देहांत के समय लगभग 26 या 29 वर्ष आयु थी) जैसे जन की मानसिक तथा हार्दिक अवस्था उस समय कैसी रही होगी। बड़े आश्चर्य की बात है कि श्री पण्डित जी ने बड़ी बहादुरी के साथ आत्म – हत्या करने का विचार अपने हृदय से पूरी तरह निकाल दिया। अब उन्होंने प्राण कर लिया कि चाहे कुछ हो जाए, मैं आत्म – हत्या नहीं करूंगा, और अपनी इस

जान लेवा बीमारी से बड़ी बहादुरी से जूझते हुए मृत्यु को गले लगाऊंगा।

विचारों और ख्यालों में जीना और बात है – लेकिन वास्तविकता का सामना करना और बात है। जैसी कि आशा थी उनकी बीमारी लगातार बढ़ती गई और उनका शरीर धीरे धीरे दुर्बल तथा कमज़ोर होता गया। बार बार दस्त तथा उल्टियां आना आम बात हो गई। श्री पण्डित जी कुछ भी काम करने से लाचार होते गए। उधर शरीर नीचे हि नीचे जा रहा था और उधर आत्म – हित की चाह उन्हें परेशान कर रही थी। अन्त में उन्होने फैसला किया कि जब तक मेरी मृत्यु नहीं हो जाती, तब तक मैं कुछ न कुछ तो अवश्य ऐसा करूं कि जो इस विश्व में हित के लाने वाला हो। मृत्यु – शैय्या पर उन्होंने अपने उन सब उपकारियों को याद करना आरम्भ किया जिनकी कृपा से उन्हें मनुष्य – जीवन सफल करने की बहुत सहायता मिली थी। उन्होंने मृत्यु – शैय्या पर बीच बीच में जब समय मिलता, अपने उपकारियों के उपकारों को याद करना तथा उन्हें लिखवाना शुरू किया। इस प्रकार एक ऐसा जन जो आत्म – हत्या करने के लिए तैयार था – मौत के बिस्तर पर लेटे लेटे एक ऐसी प्रेरणा – दायक अमूल्य पुस्तक लिख गया, जिसका मानव इतिहास में उदाहरण मिलना बहुत कठिन है। इस पुस्तक का नाम "उपकार – माला" है, जिसे सभी आत्म – हित आकांक्षियों को एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए। यह पुस्तक भगवान् के मिशन में एक विशेष स्थान रखती है।

प्यारे साथियो! हम सब में से कोई जन ऐसा नहीं है, जो मरना या आत्मा – हत्या करना चाहता हो। लेकिन क्या आपको मालूम है कि हम सब धीरे धीरे आत्म – हत्या कर रहे है। और यह आत्म – हत्या भी टुकड़ों में हो रही है, और हमें इसकी खबर भी नहीं है। जो जन धूम्र – पान करता है: जो जन मांसाहार करता है, जो जन शराब पीता है, जो जन जुआ खेलता है, जो जन धन के प्रति अनुचित आकर्षण रखता है, जो जन काम – अनुरागी है, जो जन संतान के साथ अनुचित आकर्षण में बंधा हुआ है, जो जन मान सन्मान का भूखा है तथा ऊंचे ऊंचे सांसारिक पदों के साथ पाप – मूलक भाव से बंधा हुआ है (ऐसी अनेकों बातें हैं) – वह सब आत्म – हत्या कर रहे हैं।

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा ने अपनी अद्वितीय शिक्षा में फरमाया है कि मनुष्य जीना चाहता है, लेकिन उसे यह नहीं पता कि जीवन क्या है? जीवन की रक्षा और विकास के नियम क्या हैं? ऐसे कौन कौन से नियम हैं जो जीवन की महा हानि तथा अन्त में मृत्यु लाते हैं? विनाशकारी नियमों से अपनी रक्षा कैसे की जाए, तथा रक्षाकारी और विकासकारी नियमों के अधीन कैसे चला जाए? यही शिक्षा असल में सत्य – धर्म की शिक्षा है। इस शिक्षा के एकमात्र दाता परम पूजनीय भगवान देवात्मा हैं। अत: उनकी शरण में आना, उनके सच्चे शिष्य बनना तथा अपने मनुष्य – जीवन में जीवन – प्रद नियमों की शत – प्रतिशत पैरवी करना हि सच्चे अर्थों में धर्म – वान बनना है। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हम अपने अमूल्य मनुष्य जीवन को कौड़ी बदले बेकार कर देंगे।

काश! हम सब को यह बात अच्छी तरह समझ आ सके और हम पूजनीय भगवान् देवात्मा की शरण पाने के सच्चे अधिकारी बन सकें।

चन्द्र गुप्त
अम्बाला शहर

जीवन एक कला है करते रहें कुछ नया

जीवन नकरात्मक ऊर्जा में व्यर्थ करने के लिए नहीं बल्कि आनंद, उल्लास और सक्रियता में जीने की कलात्मक देन है, द्वेष, ईर्ष्या, तुलना और धर्मकांडों के प्रपंच से बचते हुए वर्तमान को जीवन की खुशहाली से कैसे भरें, यह हमने सोचना है।

कुशलता से कोई भी किया गया कार्य सफलता का मूलमंत्र होता है, हम और हमारा मन दोनों एक हो जाते हैं, तब जो कार्य होता है वह गुणात्मक दृष्टि से बेहतर होता है, यह तभी संभव हो पाता है जब हम अपने प्रति वफादार होते हैं, सिगरेट के पैकेट पर लिखा होता है, धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, हम उसे पढ़ते हैं, फिर भी सिगरेट जला लेते हैं,

सूचना का भंडार ज्ञान नहीं होता है, ज्ञान का जन्म अनुभव की जमीन पर होता है, यह तभी संभव हो पाता है जब हम अपने आप से प्यार नहीं करते हैं, अपने आप के प्रति, अपने शरीर के प्रति, अपने मन के प्रति जिम्मेदार नहीं होते है, शरीर के प्रति सजगता ही सकरात्मक सोच के प्रति उत्साह जगाती है।

अब तक जाना गया है – अपने आप को दुखी बनाए रखें या प्रसन्न रहें, यह आप के ही हाथ में है, मेरी प्रसन्नता जब जक बाहरी दुनिया के हाथों में होगी, मै दुखी ही रहूंगा। बाहर जो घटता है वह निरंतर बदल रहा है। कभी मेरे अनुकूल घटता है, तो कभी मेरे प्रतिकूल भी मैं खुश हो जाता हूं तो कभी दुखी। हर घटना मेरी अपेक्षा के अनुसार नहीं घटती, उसे जैसे घटना था वैसे ही घटता है।

मेरा सारा प्रयास बाहर जो घट रहा है, उसे बदलने के लिए होता है। 'तो क्या मैं प्रयास करना छोड़ दूं?'

'नहीं, मैं जो प्रयास कर रहा हूं उस के अनुकूल कुछ होगा, प्रतिकूल भी घट सकता है या तीसरा कुछ भी घट सकता है।' मुझे हर परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। काम तो करना ही है। जब तक शरीर है, उसे क्रियाशील रखना है।

लेकिन यह संभव नहीं हो पाता अवसाद तो चौबीसों घंटे बना रहता है जो अप्रिय है वह काले बादल की तरह आता है और चेतना पर छा जाता है, बाहर कितना भी प्रिय घट जाए, पर भीतर अगर नकारात्मक सोच का दंश रखा है तो वह उसे भी गंदा कर देगा। याद रखिए, एक क्विंटल दूध को एक कटोरी दही फाड़ देता है।

नकरात्मकता की शक्ति ज्यादा घनी होती है, जब हम सही होते हैं, हमारी दृष्टि में उत्साह जगता है, तब बाहर का कांटों भरा पथ भी हमें चलने योग्य लगता है क्यों? 'उत्साह बाहर से नहीं आता, वह भीतर की आंतरिक शक्ति है।' हम जितना अधिक सोचेंगे उतने ही नकरात्मक होते चले जाएंगे, उतने ही दुखी व अशांत।

मैं ने यह जाना है, यह पाया है, अनावश्यक विचारणा ही अभिशाप है और उस से बचने का एक ही उपाय है, निरंतर कार्यरत रहें, और मन को पूरी तरह उसी काम में लगाएं, जानता हूं, यह कठिन है, पर असंभव नहीं है, यह तभी संभव हो पाता है जब हम इस के खतरे से सावधान हो जाते हैं। यह संभव हो पाता है, जब:

* उंगली बाहर उठती है वह भीतर की ओर भी जाने लगती है। हम बाहर से इतने प्रभावित हैं कि अपने भीतर झांक ही नहीं पाते हैं।
* दूसरों से तुलना करना, असंगत कार्य हैं।

जो कुछ मिला है, वह आप के प्रयास से मिला है, आप की मेहनत से मिला है। आप ने छोटा मकान बनाया है, सोने के लिए तख्त भी ले आए हैं। छोटी बाइक भी है। बच्चा स्कूल जा रहा है। आप खुश तो हैं। पर नहीं, इधर मकान का उद्घाटन हुआ, अगले दिन से ही विचार खड़ा हो जाता है, आप के सहयोगी ने आप से बड़ा फ्लैट ले लिया है, वह छोटी कार भी ले आया है। उस ने महंगा वाला डबल बैड खरीदा है।

आप अपने घर का, अपनी वस्तुओं का सुख नहीं ले पाते हैं, फिर एक असंतोष की आग भी आप के भीतर जग जाती है। अरे, इतनी मेहनत से आप यहां तक आए हैं, क्या खुश नहीं हैं? अगर नहीं हैं तो आप को कोई भी खुशी नहीं दे सकता है। याद रखिए, दूसरों से कभी तुलना नहीं करें। आप जो कल थे, उस से आज बेहतर हैं। तुलना हमेशा अपनी, अपने आप से ही करें। कल से स्वास्थ्य आज अच्छा है, आज खाना अच्छा खाया है, आज नींद अच्छी आई।

हर छोटी खुशी, बेहतर स्वास्थ्य और बेहतर खुशी देती जाती हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि हम हमेशा सही ही हों, गलती हर इंसान से होती है। पर समझदारी इसी में है कि आप अपना मूल्यांकन खुद ही करें। हम जब दूसरों से बात करते हैं, सलाह लेते हैं, या वे स्वयं देने चले आते हैं तो हम उन्हें सुनें और विवेक की धरती पर उस का मूल्यांकन करें।

हर सलाह को मानना भी उचित नहीं है और नकारना भी गलत है। तब मूल्यांकन अनवरत हो, पर अपनी सक्रियता को रोकना, स्थगत करना उचित नहीं है, जीवन में हर दिन यही क्रम रहता है। हमारे समाज में सलाह देने की बीमारी है। पर बहस न करें, मात्र सुन लें, काम तो आप का ही है। जो राह सही है, उसी पर चलते रहें।

इस से दूसरे की प्रतिक्रिया से आप बचे रहेंगे, आप सब को खुश नहीं रख सकते हैं पर बिना बहस के उस अवांछित की सुनें। इस से आप की ऊर्जा बढ़ेगी, कार्यकुशलता बढ़ेगी, बहस तो कहीं पर भूल कर भी नहीं करना है।

बोलें कम, सुनें ज्यादा, क्योंकि जो सलाह दे रहे हैं, ये उन के अनुभव है, जो स्मृति से निकल कर आए है, आज की समस्या नई है, इस का समाधान अतीत की जानकारी में असंभव है। सो, बहस की बहुत संभावना है। पर यहां बचना है, इसलिए विचार का स्वागत करें, विवेक पर कसें अपने सोच को निर्णय का हमेशा मूल्यांकन करते रहें, तब निराशा की संभावना कम होती चली जाती है।

सक्रिय जीवन जीने के लिए यह धारणा आवश्यक है, मैं ने पाया है, मै जहां भी गया हूं नकारात्मक भावनाओं की अनुगूंज सुबह से शाम तक सुनाई पड़ती है। कभी भी कोई भी काम शुरू किया, पहला उत्तर यही मिला–जिन्होंने किया उन्हें क्या मिला? असफलता की कहानियां सुनाई जाती है, हम इतने भयभीत क्यों हैं? हर काम शुरू करने के पहले ही हमें दूसरे की असफलता का उदाहरण दे कर डरा दिया जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि कुछ भी करने के लिए मन बनाने से पहले ही हमें डरा दिया जाता है।

इस नकारात्मक सोच ने हमारी मानसिक ऊर्जा को सोख लिया है। हम एक पक्षी की तरह हैं, जो नकारात्मक आकाश में उड़ रहे हैं। जिन के लिए कहीं ठिकाना नही है। हम इस से बचें, ऐसे लोगों से बचें।

हम भूतप्रेतों से बहुत डरते है। सवाल होते हैं। भूत होते है या नहीं? पर जो निरंतर अतीत में है, दुखद

बाकी सफा 8 पर

शुभ संग्राम

(13 मार्च से 17 मार्च 2015)

मल्लेका : श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को गानियाना में मिल गए। मल्लेका पहुंचकर 8.30 बजे सभा रखी गई।

8.30 बजे रात :- इस सभा में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने विज्ञान का महत्व बताया कि किस प्रकार विज्ञान ने जहां भी अपना हाथ रखा है, नई बरकतें प्रदान की हैं। सफर की दुनियां में, रोशनी की दुनिया में परन्तु धर्म की दुनियां में विज्ञान की अवश्यकता को नहीं समझा। गुरू महाराज ने विज्ञान के नियमों और सचाईयों पर आधारित अद्वितीय धर्म की स्थापना की है। मुख्य रूप से मिथ्या विश्वासों और बुराईयों का नाश अपनी अद्वितीय शिक्षा द्वारा किया है। फिर उन्होंने अगले दिनों का प्रोग्राम बताया।

14.3.2015 सुबह 8.30 बजे :- इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि नेचर के भीतर नियमों का राज है। प्रत्येक अस्तित्व अपने भीतर से असर छोड़ता है। खुशबू ओर बदबू के असरों को तो हम महसूस करते हैं, परन्तु जो असर मनुष्यों द्वारा निकल कर हमें प्रभावित करते हैं, उन्हें अनुभव नहीं करते। एक बज़ुरग ने अपने असरों से नौजावनी की उमर में मुझे गाली निकालने से सारी उमर के लिए बचा दिया, परन्तु उन्हें गरीब मजदूरों की संगत कई वर्ष करनी पड़ी, उससे वह स्वयं गालियां निकालने लग गए। गुरू महाराज की संगत के असरों ने जीत सिंह जी के भाई को अपने बड़े भाई के सम्बन्ध में अपराधी रूप को देखने के लिए मजबूर कर दिया, इस करामात ने ही श्रीमान अजीत सिंह जी को सदा के लिए इस दर से जोड़ दिया। सभापति जी ने एक मजदूर की बात बताई कि कैसे नीच वासनाओं का दास होकर वह सदा के लिए बर्बाद हो गया। वह जैलदार का पुत्र था, परन्तु बहुत घृणित नीच जीवन का शिकार हुआ। गांधी जी जैसे महान व्यक्ति भी नीच असरों में घिरकर नीच गति करने के लिए तैय्यार हो गए थे। श्री गंगा सिंह जी सिक्ख मिश्नरी कालिज के प्रिंसीपल विदेश में जाकर उनके असरों में रंगे गए।

देवात्मा के प्रभावों की संगत महा हितकर संगत होती है। इन प्रभावों में चोर अपनी चोरियां स्वीकार करते हैं, एक 2 जन ने हस्पताल से चोरी के बदले अच्छी रक्म वापिस की। एक उपकारी को सूट भेंट किया। श्रीमान राम सिंह जी इस संगत से ऋषि बन गए। इस सभा में हाजरीन ने असरों के महत्व को अनुभव किया।

14.3.2015, राम 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने श्रीमान नेत राम जी द्वारा रचित भजन गाया "देवगुरू की शरण न आऊंदा, पौंदा दुख घनेरे मैं" सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान के प्रभावों से जो मनुष्यों की काया कल्प होती है, उसका प्रभावदायक शब्दों में वर्णन किया। किस प्रकार पण्डित जी के नशई, मांसाहारी, जूए बाज जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। जूए में जो सब ज़मीन बेच चुके थे, काम वासना में नष्ट हो रहे थे, उन्हें पवित्र वा परोपकारी जीवन अता कर दिया। उनके ऐसे जीवन को श्रद्धा भाव से सजदा करते हैं। सभापति जी ने सरदार हरनाम सिंह जी, जो पक्के शिकारी, शराबी, मुजरे कराने वाले थे उनके उच्च परिवर्तन का ज़िकर किया। नशों के

गुलामों को औरों के नशे छुड़ाने वाला बना दिया। मांसाहारी वा शिकारियों को पशुओं की सेवा में लगा दिया। लड़कियों को मारने वाले उनके रखवाले बन गए। किस प्रकार मिस्तरी वधावा राम जी वाम मार्ग छोड़कर निर्मल जीवन-धारी बन गए। सेवा करने की भीख मांगते थे, उन्हें दाता जी के शब्दों से नवाजा गया। फिर सभापति जी ने अपने ऊपर गुरू की मेहरबानियों को शुक्राने के भाव से वर्णन किया।

15.3.15 सुबह 8.30 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि सूरज चढ़ा होने के बावजूद हम आत्मा के लिहाज से अन्धेरे में है। गुरूमहाराज के कर्मचारी अपनी अबोधता से न चाहकर भी गुरू महाराज का अपमान करते थे, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे अबोध बच्चा अपनी गन्दगी से मां को दुखी करता है। गुरू महाराज का और गुरूओं से ज़मीन आसमान का अन्तर है, यदि उनका रूप कुछ भी नज़र आ जावे, तो हम उनको दुखी नहीं कर सकते। उन्हें सच्चा प्रणाम करने का लाभ भी नज़र आएगा।

गुरूदेव राज जी के पिता जी इनके व्यवहार से एक बार इतने दुखी हो गए कि हस्पताल पहुंच गए, परन्तु इनके अच्छे व्यवहारों ने, इनके उच्च परिवर्तन ने उनके दिल पर अच्छा असर डाला। जब कोई नीच गति करते थे, तो गुरू महाराज को बहुत दुख पहुंचता था वह मृत्यु के निकट पहुंच जाते थे, गुरू महाराज नेचर के सब जगतों से अपने आप को जुड़ा हुआ महसूस करते थे। इसलिए किसी को नीचा जाता देख वह तड़प उठते थे।

गुरू महाराज ने सच्चे धर्म के परखने के लिए चार कसौटियां दी हैं, पहला सच्चे धर्म में गुरू का निज का जीवन कैसा है, दूसरा उनकी शिक्षा कैसी है, तीसरा उनकी ज़िन्दगी का लक्ष्य क्या है, चौथा उनके द्वारा किए कारज के फल क्या हैं?

सच्चा प्रणाम करने के लिए गुरू के उपकारों, और अपनी कमियों को देखने की आवश्यकता है। यह नियम सब सम्बन्धों में है।

15.3.2015, सभापति जी ने बताया कि मनुष्य का भला और बुरा होना उसकी विरासत और बातावरण पर निर्भर है। विरासत के नियम सब जीवधारियों पर एक जैसे हैं। अच्छे बच्चे गल्त वातावरण में गालियां निकालने लगा जाते हैं। उस संगत से दूर होकर हट जाते हैं। विरासत में कोई तबदीली नहीं की जा सकती। संगत वा वातावरण बदलने से जीवन की गति बदल जाती है। इसलिए मनुष्य को नीच वा उच्च संगत का अन्तर जानना अवश्यक है। देव प्रभाव दायक संगत के निराले असर होते हैं। इस संगत से पाई अन्मोल बरकतों का वर्णन किया जो उन्होंने स्वंय पाई हैं। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी उच्च संगत के उच्च फलों का वर्णन किया

16.3.2015, सुबह 8.30 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सच्चा प्रणाम करने के विषय में बताया। श्रीमान वरियाम सिंह जी गुरू महाराज को प्रणाम करते समय यह पुकारते "तार दित्ता ओए गुरूआ तूं" वह अपना जुआ, बेईमानी, शराब, मासाहार याद करके धन्यवाद देते थे। गुरू महाराज को हार चढ़ाते हुए, उनकी आंखों में आसूं आ जाते थे। घर में माननिय जनों को प्रणाम करते रहने से घर से दुख कलेश ख़त्म हो जाते हैं।

सभापति जी ने बताया कि अकसर मनुष्य को दुसरों के गुण, उपकार, वा दुख नज़र नहीं आते। गुरू महाराज की रोशनी में ही मनुष्य को यह अन्दरूनी

अन्मोल नेत्र मिलते हैं।

16.3.2015 दुपहिर 1 बजे श्रीमान बलबहादुर सिंह ने स्वामी विवेकानन्द पब्लिक स्कूल के अध्यापकों के साथ सभा की, जिसमें गुरू महाराज के प्रभावों द्वारा किस प्रकार अध्यापिक बच्चों को प्यार करने लगते हैं बताया। बच्चों के भले में ही उन्हें रस मिलता था। श्री पी. वी. कनल जी और उनके सपुत्र थे एस.पी. कनल, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के विद्यार्थियों के प्रति समर्पित जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। सभा के अन्त में प्रिंसीपल सरताज सिंह जी के प्रश्नों के विचार पूर्वक उत्तर दिए।

16.3.2015, दुपहिर के बाद :- श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेका के घर एक पारिवारिक सभा की गई। पारिवारिक मेल, सुख और विकास के नियमों का ब्यान किया गया। आपस की सेवा और सन्मान की आवश्यकता है। पारिवारिक जनों को लेकर ही विकास सम्भव है। उनको पीछे छोड़कर केवल स्वार्थ का जीवन जीना, उच्च सुखों से वंचित होना है। त्याग, कुर्बानी करके मेल और प्यार में बढ़ौतरी होती है। मिथ्या विश्वास और पाप कर्म परिवार के मेल और विकास के शत्रु हैं।

16.3.2015 रात 8 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने वेदान्त की मिथ्या शिक्षा की हानि को बताया। सम्बन्धों में हितकर व्यवहार ही धर्म होते हैं। पति पत्नी, माता पिता, भाई बहनों के सम्बन्धों में गुरू महाराज के प्रभावों द्वारा ही अपनी नीच गतियों का सच्चा ज्ञान होता है। सभापति जी ने अपनी बहन के पोते के सम्बन्ध में अपनी गल्तियों का दुखी दिल के साथ वर्णन किया। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी एक अध्यापिक के अन्दर आए परिवर्तन का ब्यान किया, जिन्हें उनकी माता का उपकारी रूप गुरू की रोशनी में नज़र आया था। उन्होंने बताया इन सब सम्बन्धों का आधार स्वार्थ था, श्रद्धा, कृतज्ञता और हमदर्दी के भाव होने चाहिए। इनके द्वारा ही देवात्मा परिवारों में सच्चा स्वर्ग ला रहे हैं।

17.3.2018, सुबह 8.30 बजे :- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि श्रीमान इन्द्र सिंह जी के घर में हररोज़ रात को सब पारिवारिक जन मिलकर देव आरती का गान करते हैं। प्रणाम कौन कौन कर रहा है, उसकी पड़ताल की। गुरूदेव राज जी पहले अपनी मां की पागल कहते थे परन्तु अब हर रोज़ प्रणाम करते हैं। समाज आठ पाप छुड़वाती है, परन्तु जीवन इसी से सफल नहीं होता। घरों में सद्व्यवार होने चाहिए। सारी उमर भी सेवा में लगकर जीवन सफल हो जावे तो गनीमत है। हमें जीते रहने के नियमों को पालन करना पड़ता है। आत्मा शरीर को जिन्दा रखता है। इस विषय में धर्मों को कुछ पता नहीं। गुरू महाराज ने इसका सही ज्ञान दिया है। आत्मा को मारने वाले कामों को त्यागना है। सेवा करने से आत्मा को जान मिलती है। एक एक जन ने सेवा में जीवन समर्पित कर दिया और उसके इवज़ में कुछ नहीं मांगा। जो भाव आत्मा को बिमार करते हैं, उनसे बचना है। गुरू महाराज ने फरमाया है कि सारी मानवता आत्मा को तबाह करने के मार्ग पर पड़ी हुई है। आत्मा को मारने वाले भावों से मोक्ष पाना ही मनुष्य का लक्ष्य है। आत्म ज्ञान वा आत्म बोध के बिना कई बार परोपकारी भी हानि उठा लेते हैं। मिथ्या और स्वार्थ आत्मा के शत्रु हैं।

यहां का प्रोग्राम वहां के सब जनों के लिए काफी लाभप्रद रहा। इस आख़िरी सभा के बाद दोनों साथी पदमपुर की ओर रवाना हो गए।

एक हाजरीन

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सफा – 2 का बाकी

लिए वह जिम्मेवार नहीं है।

नेचर के अस्तित्वों के साथ सम्मिलित होने का जीवन ही, आदर्श व अच्छा जीवन हो सकता है क्योंकि हमारा वजूद अनिवार्य रूप से दूसरे अस्तित्वों के साथ जुड़ा हुआ है। नेचर में जो वास्तविक अस्तित्व हैं, उन से परे और बाहर मौत है। अस्तित्वों के साथ मिला जुला जीवन या तो नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं पर आधारित होता है या उच्च अनुरागों और उच्च घृणाओं पर। जब जीवन नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं पर आधारित होता है तो ऐसा जीवन अनैतिकता का जीवन है क्योंकि इससे विविध सम्बन्धों में मिथ्या और अशुभ की उत्पत्ति होती है। परन्तु जब जीवन का आधार विशुद्ध सात्विक परोपकार पर होता है, तो आत्मा उच्चार नैतिकता को प्राप्त कर लेता है। देवात्मा गम्भीरता पूर्वक इस बात पर जोर देते हैं कि मिथ्या ओर अशुभ की उत्पत्ति करने में नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं का पूरा-पूरा हाथ है और चाहते हैं कि मनुष्य अपने सम्बन्धों में विशुद्ध सात्विक भावों को पैदा करे। देवशास्त्र चौथे खण्ड में वह मनुष्य के विविध सम्बन्धों का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं और देव शास्त्र भाग तीन में हमें बताते हैं कि नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से विभिन्न सम्बन्धों में मिथ्या और अशुभ की उत्पत्ति होती है।

देवात्मा मानवीय सम्बन्धों को सोलह भागों में विभक्त करते हैं मुख्य रूप से मनुष्य मानवीय समाज से जुड़ा हुआ है। सामाजिक सम्बन्ध जटिलता के सम्बन्ध है। मनुष्य एक बेटा है, भाई है, पति है, पिता है, हिन्दू है, भारतीय है। मानवीय अस्तित्व है। इनमें से प्रतयेक सम्बन्ध जिनके साथ वह बन्धा हुआ है, उसके जीवन को समृद्ध बना सकता है यदि वह अपने जीवन में विशुद्ध सात्विक भावों को समाविष्ट करता है। विशुद्ध सात्विक भाव नाना प्रकार के हैं- जैसे श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, सम्मान, आदर, सत्कार रखना, न्याय, विश्वास, वफादारी, हानि परिशोध, मेल मिलाप की भावना और विशुद्ध सेवा। परोपकारिता हमारे जीवन की संरचना है जब हम विभिन्न सम्बन्धों में इन भावनाओं को जाग्रत और विकसित करते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts